गर्ल स्काउट्स की संस्थापक



जूलियट गॉर्डोन लो

आज सब लोग मुझे जूलियट के नाम से जानते हैं. पर एक ज़माने में सभी लोग मुझे डेज़ी के नाम से बुलाते थे. मेरा जन्म 1860 में हैलोईन वाले दिन हुआ. मेरे जन्म के तुरंत बाद ही अमरीका में गृह-युद्ध (सिविल वॉर) शुरू हो गया. वैसे उस समय हम गृह-युद्ध को, राज्यों के बीच का युद्ध बुलाते थे. अगर आप उत्तरी अमरीका में रह रहे हों, तो लोग आपको "यैंकी" बुलाते . अगर आप दक्षिणी अमरीका में रह रहे होते तो वे आपको "रिबेल" (यानि "बागी") बुलाते.

इसलिए मैं एक बागी थी, और मेरे पापा भी बागी थे. मां के अनुसार मेरे पिताजी एक बहुत ही बहादुर अफसर थे.



मेरी माँ भी बागी थीं, जबकि उनके बहुत से रिश्तेदार "यैंकी" थे. जब मैं बहुत छोटी थी तो एक बार "यैंकी" सेना मेरे शहर सवानाह से मार्च करती हुई निकली.

एक "यैंकी" जनरल हमारे घर मिलने के लिए आए. मैं सीधे उनके पास गई और मैंने उनसे पूछा, "आपके हाथ को क्या हुआ?"

"एक बागी ने मेरे हाथ को गोली से ज़ख्मी किया," उन्होंने उत्तर दिया.

"शायद मेरे पापा ने ही किया हो. उन्होंने कई "यैंकी" को मारा है."

यह सुनकर जनरल हंसने लगे.

"यैंकी" लोगों के आने के बाद से मेरा शहर सवानाह काफी असुरक्षित हो गया था.

एक चाचा हमें शिकागो ले जाने के लिए आए. युद्ध ख़त्म होने तक हमारा शिकागो में ही रहना ठीक होगा. पर माँ वहां नहीं जाना चाहती थीं. पर सुरक्षा की दृष्टि से उत्तरी अमरीका में रहना कहीं अच्छा था.



मुझे शिकागो के बारे में कुछ ख़ास याद नहीं. मुझे बस वहां दादी की सुनाई कहानियां ही याद हैं. मुझे सबसे प्रिय कहानी अपनी परदादी एलेनोर लिटल किन्ज़ी की लगती है. जब वो बहुत छोटी थीं तो *सेनेका इंडियंस* ने उनका अपहरण कर लिया था. बाद में सेनेका इंडियंस उन्हें बहुत प्यार करने लगे और उन्होंने उन्हें अपने परिवार का एक सदस्य बना लिया. सेनेका इंडियंस ने उन्हें एक नया नाम दिया, *"छोटा जहाज़, पाल के साथ."*

"उन्होंने उन्हें यह अजीब नाम क्यों दिया?" मैंने पूछा.

"क्योंकि वो किसी भी काम को करने से पहले एक दृढ़ निश्चय करती थीं," दादी जूलियट ने कहा. "अगर एक बार वो किसी काम को करने का अपना मन बना लेतीं तो चाहें वो कितना भी कठिन क्यों न हो, वो उस काम को करके ही छोड़तीं थीं. तुम्हारी माँ भी वैसी ही हैं, और तुम भी वैसी ही हो, डेज़ी. कुछ सालों के बाद एलेनोर अपने परिवार के पास वापिस आ गयीं. पर वो अपने इंडियन मित्रों को कभी नहीं भूलीं."

मैं *"छोटा जहाज़, पाल के साथ"* की कहानी को कभी नहीं भूली. ज़रा कल्पना करें? उन लोगों के साथ दोस्ती करना, जिनकी भाषा भी आप नहीं जानते!



जब हम शिकागो में थे तो हमें एक बुरी खबर सुनने को मिली. हम लोग युद्ध हार गए थे! सवानाह वापिस जाने से पहले हमें कुछ इतंज़ार करना पड़ा. पर वहां हमारा घर सुरक्षित था, यह देखकर मैं और मेरी बहनें खुश थीं. पास के घर में हमारी चचेरी बहनें रहती थीं, वे भी सुरक्षित थीं. हम लोग गॉर्डोन थे, और हमारी चचेरी बहनें एंडरसन थीं.

एक बार हमारे यहाँ चिक्की बनी. मेरे चचेरे भाई रैंडोल्फ ने गुड़ की चाशनी को खींचने में मेरी मदद की. वो गर्म थी और उसका रंग शहद जैसा भूरा था. रैंडोल्फ ने मेरी ओर देखकर कहा, “डेज़ी, ज़रा देखो. इस चाशनी का रंग बिल्कुल तुम्हारे बालों जैसा है!”

फिर मैं चाशनी को अपने बालों के पास लाई. “वाकई में मेरे बालों और चाशनी का रंग बिलकुल एक-जैसा था. अगर मैं बालों में कुछ चाशनी लगा लूं तो किसी को पता भी नहीं चलेगा,” मैंने कहा. माँ ने मुझे फटकारा और कहा कि अगर मैं वैसा करूंगी तो वो मेरे बाल काट डालेंगी!

कई बार मुझे लगता था कि जैसे मेरे विचार समझदारी के लिहाज़ से बहुत आगे थे. मैं मुस्कुराई. नए प्रयोग करने में रिस्क और खतरा तो था ही, पर क्योंकि वे बहुत मज़ेदार थे इसलिए उन्हें छोड़ा भी नहीं जा सकता था.



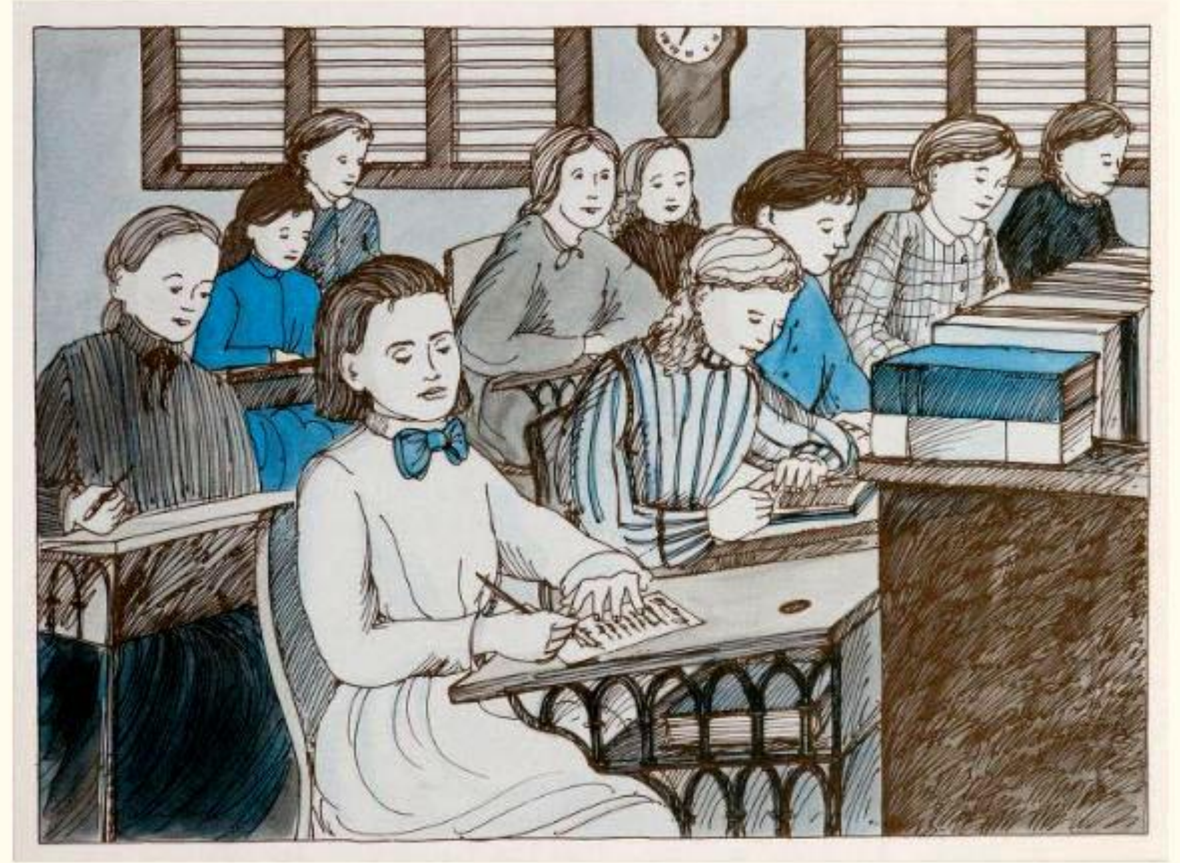
गर्मियों की छुट्टियों में हम सब भाई-बहन चाची के प्लांटेशन (बागान) इटोवा क्लिफ़्स पर चले जाते थे.

इटोवा क्लिफ़्स में, मेरे दिमाग में नए-नए विचार आते थे. एक बार मैंने और मेरी चचेरी बहन नेली ने एक रहस्यमय शरबत बनाया "आड़ू शरबत". हमने वो शरबत अपनी अन्य चचेरी बहनों को बेचा. मेरी छोटी बहन ऐलिस को भी इटोवा क्लिफ़्स पर बहुत मज़ा आता था.

पर गर्मियों की छुट्टियां जल्दी ही ख़त्म हो गईं. हमें स्कूल भी जाना होता था. चौदह साल की उम्र में मुझे एक बोर्डिंग स्कूल स्टुअर्ट हाल, वर्जिनिया में पढ़ने के लिए भेजा गया.

फिर मुझे न्यू-यॉर्क सिटी में एक अन्य बोर्डिंग स्कूल में भेजा गया. आप कल्पना कर सकते हैं, कि वो मेरे लिए आसान नहीं था. पर तभी मुझे मुझे अपनी परदादी *"छोटा जहाज़, पाल के साथ"* की याद आई. उन्होंने आसानी से इंडियंस की भाषा सीख ली थी. इसलिए मैं भी कुछ नया सीख सकती थी.

इससे पहले कि मुझे स्नातक की डिग्री मिलती, मेरे छोटी बहन को काला-अज़र हुआ और उसका देहांत हो गया. मैं उससे बहुत प्यार करती थी. उस समय मुझे इस बात का कोई अंदाज़ नहीं था कि बाद में मुझे अपनी बहन की कितनी याद आएगी.



जब मैं 22 वर्ष की हुई तब मैंने दुनिया घूमने का अपना मन बनाया! सबसे पहले मैं इंग्लैंड गई. वहां पर मैं लो परिवार के साथ रही. वे मेरे परिवार के मित्र थे. मुझे उनकी बेटियां - केटी, हेटी और एमी पसंद आईं. मुझे उनका भाई विली इतना पसंद आया कि कुछ सालों बाद उससे मेरी मंगनी हो गई.

मुझे घूमना और नए-नए लोगों से दोस्ती करना बहुत पसंद था. मुझे लगा कि दुनिया एक मज़ेदार जगह थी. फिर मुझे कान का इन्फेक्शन हुआ. मैं सवानाह में एक डॉक्टर को दिखाने गई. मैंने अखबार में इलाज के लिए “सिल्वर नाइट्रेट” द्वारा इलाज के बारे में पढ़ा था. मैंने डॉक्टर को उससे इलाज करने का सुझाव दिया.

“क्या आप वाकई में “सिल्वर नाइट्रेट” से इलाज करवाना चाहती हैं, मिस गॉर्डोन?” डॉक्टर ने पूछा.

“बिल्कुल,” मैंने कहा, “मुझे लगता है, वो ज़रूर काम करेगा.”

पर उससे उपचार नहीं हुआ, उल्टे हालत और खराब हुई. मेरे कान से खून निकला. कमज़ोरी के कारण मैं उठ भी नहीं पाई. जब मैं ठीक हुई तब तक मेरे उस कान की सुनने की क्षमता लगभग ख़त्म हो चुकी थी. जैसे मैंने पहले कहा, कई बार अच्छे विचार ठीक काम नहीं करते हैं.



पर उसके बाद हालात और खराब हुए. शादी के बाद जब मैं और विली घर से जा रहे थे, तब लोगों ने शुभ-विवाह के लिए हम पर चावल के दाने न्यौछावर किए. उनमें से एक दाना मेरे कान में घुस गया जिससे दुबारा इन्फेक्शन हुआ और मुझे फिर पलंग पकड़ना पड़ा. जब मैं ठीक हुई तब तक मेरी सुनने की क्षमता लगभग पूरी तरह ख़त्म हो चुकी थी. मुझे उससे काफी चिंता हुई. पर मुझे यह भी लगा कि हर समस्या का अच्छी तरह सामना करना चाहिए. मेरे सामने अपनी परदादी *"छोटा जहाज़, पाल के साथ"* की मिसाल मौजूद थी. हियरिंग-ऐड से ज़रूर कुछ मदद मिली. फिर मैं और विली, इंग्लैंड में विली के घर में रहने चले गए. मुझे लोगों को पार्टी के लिए घर बुलाना बहुत अच्छा लगता था. बहुत से लोग हमारे साथ शिकार पर भी जाते थे. विली और मैं एक बार महारानी विक्टोरिया से मिलने के लिए बकिंघम पैलेस भी गए.

इस तरह मैं घूमती रही और दोस्त बनाती रही. फ्रांस, इंडिया और मिस्त्र मुझे बहुत अच्छे लगे पर मेरी सबसे पसंद जगह सवानाह ही थी. मैं जहाँ भी जाती वहां मैं अपने कुत्तों और अपने पालतू तोते - पोली पूंस को ज़रूर साथ में लेकर जाती.



1898 में स्पेन और अमरीका के बीच युद्ध छिड़ गया. मेरे पिता तब तक ब्रिगेडियर जनरल बन गए थे. मेरी माँ, पिताजी के साथ मिआमी गईं जहाँ उन्हें बीमार सैनिकों के लिए एक अस्पताल शुरू करना था. मैं भी अगला जहाज़ पकड़ कर अमरीका गई. मैं अस्पताल शुरू करने में उनकी मदद करना चाहती थी.

बहुत से सैनिक टाइफाइड के ज्वर से पीड़ित थे. अस्पताल में मेरा काम किचन का काम देखना था. खाना पकाना वाकई में एक मुश्किल काम था.

वहां पर हमेशा खाने की कमी रहती थी - खासकर दूध की. मैं अक्सर दूध की तलाश में इधर-उधर घूमती फिरती थी. मैं किसानों से बातचीत करती थी और उन्हें घायल और बीमार सैनिकों के बारे में बताती थी. कभी-कभी मैं किसी किसान में खलिहान में गाय का दूध दूने बैठ जाती थी. फिर मैं दूध को एक बाल्टी में डालकर वापिस लाती थी. मैं कभी भी खाली हाथ नहीं लौटती थी. मुझे लगता है कि सोचने वाला इंसान कहीं भी, किन्हीं भी हालात में मदद कर सकता है.



युद्ध समाप्त होने के बाद मैं वापिस इंग्लैंड आई. मेरे पति विली बीमार पड़े और 1905 में उनका देहांत हो गया. उसके बाद मैं बहुत उदास और अकेलापन महसूस करने लगी. पैंतालीस साल की उम्र में पहली बार अब मेरे दिमाग में कोई नया विचार नहीं आ रहा था.

पर कुछ समय खोजबीन करने के बाद मुझे एक नया प्रोजेक्ट मिला. मेरे मुलाक़ात सर रोबर्ट बेडिन पॉवेल से हुई. उन्होंने हाल ही में एक "बॉय स्काउट्स" की स्थापना की थी. वे लड़के बीहड़ जंगलों और पहाड़ों में ज़िंदा रहने की "सरवाईवल" कुशलताएं सीखते थे. उन लड़कों में बहुत ऊर्जा थी और उसका सीधा प्रभाव मुझपर भी पड़ा.

"कितनी मज़ेदार बात है!" मैंने कहा. "मुझे लड़कियों को स्काउटिंग सिखाने में बहुत मज़ा आएगा!"

"डेज़ी, तुम लड़कियों के एक समूह को जल्द की इकठ्ठा करके उन्हें स्काउटिंग सिखाना शुरू करो," बेडिन पॉवेल ने सुझाया. "यहाँ हम उन्हें "गर्ल गाइड्स" बुलाते हैं."

उससे मैं बहुत प्रेरित हुई. मेरे ग्रुप ने जल्द ही फर्स्ट-ऐड, नक़्शे पढ़ने, सिग्नलिंग, रस्सी की गांठें बाँधने और खाना पकाने की ट्रेनिंग ली. मुझे लगा पूरी दुनिया की लड़कियों को स्काउटिंग सीखने में बड़ा मज़ा आएगा. फिर मैं उसके बारे में योजना बनाने लगी. उसके बाद मैं जहाज़ से अमरीका गई.



सवानाह पहुंचकर मैंने सबसे पहले अपनी सबसे पुरानी और प्रिय मित्र नीना पापे को फोन किया.

"तुम जल्दी से मुझसे मिलने के लिए आओ," मैंने कहा. "मेरे पास सवानाह की लड़कियों, और अमरीका समेत पूरी दुनिया की लड़कियों के लिए एक प्रोग्राम है. हम आज रात ही उसे शुरू करेंगे."

मैंने नीना को स्काउट और गाइड्स के बारे में सब कुछ बताया. उससे लड़कियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वो जंगलों में खुद अपनी हिफाज़त कर पाएंगी, वे नई-नई जगहें खोज पाएंगी, और साथ में दूसरे ज़रूरतमंद लोगों की मदद भी कर पाएंगी."

"मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में यही करने की कोशिश की है," मैंने कहा. "मुझे यकीन है कि मैं लड़कियों की यह सब करने में मदद कर पाऊंगी."

अब सालों की घुमक्कड़ी के दौरान बने मेरे सभी मित्र काम आये. मैं एक शहर से दूसरे शहर गई और वहां मैंने लोगों से बाचचीत और चर्चा की. बड़ी तादाद में लड़कियां इस कार्यक्रम में शामिल होने को तैयार हुईं. मैंने अलग-अलग स्थानों पर इकाइयां बनाईं और उनके लीडर्स को नियुक्त किया. शायद, यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा विचार था.



जब पहला महायुद्ध शुरू हुआ तो मेरी गर्ल स्काउट्स को, युद्ध में मदद करने का भी एक मौका मिला. वैसे मैं अब थक गई थी और बीमार रहती थी. फिर भी मैं अपनी गर्ल स्काउट्स के साथ अस्पतालों और कैंटीन्स में जाती थी. मुझे उन लड़कियों पर बहुत गर्व था.

युद्ध समाप्त होने के बाद हम सब लोग शांति के बारे में ज़्यादा सोचने लगे. मेरे पूर्वजों ने अमरीका में शांति स्थापित करने में बड़ा योगदान दिया था. मेरी परदादी *"छोटा जहाज़, पाल के साथ"* ने सेनेका इंडियंस को समझने की पूरी कोशिश की थी. फिर भला गर्ल स्काउट्स लड़कियां, अन्य देशों की लड़कियों से क्यों न मिलें, और क्यों न उनसे दोस्ती बनायें? उसके बाद से मैंने "वर्ल्ड कैम्प्स" (विश्व-शिविर) आयोजित किये जहाँ पर अलग-अलग देशों की गर्ल स्काउट्स आपस में मिल सकती थीं और शांति एवं भाईचारे को बढ़ावा दे सकती थीं.



अमरीकी गर्ल स्काउट्स के पहले शिविर का नाम – “जूलिएट लो” को मेरे नाम पर रखा गया. वो लुकआउट माउंटेन, जॉर्जिया में आयोजित हुआ. पहले कैंप में लड़कियों को बहुत मज़ा आया. अगर शाम को जब कैंप-फायर (अलाव) जलता है तो फिर लोगों को कहानियां भी सुनानी पड़ती हैं. लड़कियों को सबसे ज़्यादा मज़ा मेरी परदादी *“छोटा जहाज़, पाल के साथ”* की कहानी में आता था.

लड़कियों के साथ मेरी सबसे सुखद याद 1926 के कैंप की है. उस समय हमने एक “वर्ल्ड कैंप” आयोजित किया था. दुनिया के अलग-अलग देशों की लड़कियां उसमें शामिल होने के लिए न्यू-यॉर्क आई थीं. वैसे उस समय मैं कैंसर से बीमार थी, फिर भी उसका हर क्षण मेरे लिए सुखद था.

उसमें हॉलैंड की लड़की ने मुझे एक गुड़िया भेंट की जिसे मैंने हमेशा अपने साथ रखा. रात भर अलाव के सामने लड़कियों ने अपने-अपने देशों की कहानियां सुनाईं. लड़कियों के एक-दूसरे से दोस्ती बनाई, जिसे देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई. “शांति की ओर यह एक अच्छा कदम है,” मुझे लगा.





एक बार मैंने अपने जन्मदिन पर गर्ल स्काउट्स को एक पत्र लिखा.
मैंने लिखा :

“जब तुम नवम्बर में गर्ल-स्काउट्स हफ्ते को मनाने के लिए इकट्ठी हो तो उस समय तुम दुनिया की उन तमाम लड़कियों - अपनी बहन गर्ल स्काउट्स के बारे में भी ज़रूर सोचना. हम स्काउटिंग को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना सकते हैं, जिससे लोग उसके पीछे की भावना को समझें और देखते ही कहें - अरे हाँ, वो गर्ल स्काउट्स है!”

मैं चाहती हूँ, कि लोग मुझे इसी भावना के साथ याद रखें.

समाप्त